

कद्दूवर्गीय सब्जियों में 3जी कटिंग: उत्पादन बढ़ाने की एक वैज्ञानिक तकनीक



**डॉ. सुभाष वर्मा^{1*}, डॉ.
सोहन लाल नारोलिया²**

¹सहायक प्रोफेसर, एकलव्य
विश्वविद्यालय, दमोह
(म.प्र.)-470661

²पीएच.डी., उद्यान विज्ञान विभाग,
एसकेएनएयू, जोबनेर, जयपुर,
(राजस्थान)

भारत में कद्दूवर्गीय सब्जियां, जैसे लौकी, कद्दू, तरोई, खीरा, करेला, और टिंडा, व्यापक रूप से उगाई जाती हैं। ये सब्जियां न केवल पोषण से भरपूर होती हैं, बल्कि किसानों के लिए आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत भी हैं। बढ़ती जनसंख्या और कृषि भूमि की घटती उपलब्धता के कारण इन सब्जियों की पैदावार को अधिक कुशल बनाना आज समय की आवश्यकता है। कद्दूवर्गीय सब्जियों की अच्छी पैदावार के लिए उन्नत वैज्ञानिक तकनीकें अपनाई जा रही हैं। इनमें से एक प्रमुख तकनीक है "3जी कटिंग," जो पौधे की वृद्धि और उपज को बढ़ाने में सहायक होती है। इस तकनीक से न केवल उत्पादन में वृद्धि होती है, बल्कि फलों की गुणवत्ता भी बेहतर होती है। आइए, इस तकनीक के बारे में विस्तार से जानें।



3जी कटिंग क्या है?

3जी कटिंग का मतलब है "तीसरी शाखा की छंटाई।" यह एक ऐसी विधि है, जिसमें पौधे की मुख्य बेल से निकलने वाली पहली और दूसरी शाखाओं को प्रारंभिक अवस्था में ही काट दिया जाता है। इसके बाद तीसरी शाखा को बढ़ने दिया जाता है, क्योंकि यह शाखा आमतौर पर सबसे अधिक फल देती है। इस तकनीक का आधार

पौधे की ऊर्जा और पोषक तत्वों का सही दिशा में उपयोग सुनिश्चित करना है।

3जी कटिंग की प्रक्रिया

3जी कटिंग की प्रक्रिया सरल है, लेकिन इसे सावधानीपूर्वक और उचित समय पर करना आवश्यक है। इस प्रक्रिया में निम्नलिखित चरण शामिल हैं:

1. पौधों की पहचान

➤ पौधे की मुख्य बेल से निकलने वाली शाखाओं को ध्यान से देखें। इन शाखाओं को प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक शाखाओं में वर्गीकृत करें।

2. पहली और दूसरी शाखा की छंटाई

➤ जैसे ही पौधे में पहली और दूसरी शाखाएं निकलें, उन्हें साफ और धारदार कैंची या

ब्लेड का उपयोग करके काट दें। यह छंटाई पौधे की प्रारंभिक अवस्था में की जानी चाहिए।

3. तीसरी शाखा को बढ़ने देना

- तीसरी शाखा को प्राकृतिक रूप से बढ़ने दें। इसे सहारा देने के लिए बांस या रस्सी का उपयोग करें ताकि यह सही दिशा में विकसित हो सके।

4. समय पर देखभाल

- छंटाई के बाद पौधों को पर्याप्त पानी और पोषक तत्व प्रदान करें। पौधों को जैविक खाद या संतुलित उर्वरकों से पोषण देना सुनिश्चित करें।

3जी कटिंग के फायदे

3जी कटिंग अपनाने से कद्दूवर्गीय सब्जियों की खेती में कई लाभ प्राप्त होते हैं। इनमें प्रमुख फायदे निम्नलिखित हैं:

1. पैदावार में वृद्धि

- इस तकनीक से पौधे का पोषण सीधे तीसरी शाखा पर केंद्रित होता है, जिससे अधिक और बेहतर गुणवत्ता वाले फल प्राप्त होते हैं।

2. गुणवत्ता में सुधार

- फलों का आकार और रंग बेहतर होता है, जिससे उनकी बाजार में मांग बढ़ती है।

3. पौधे का सही विकास

- पौधे की अनावश्यक ऊर्जा पहली और दूसरी शाखाओं पर खर्च नहीं होती, जिससे वह

स्वस्थ और संतुलित रूप से विकसित होता है।

4. कीट व रोग नियंत्रण

- पौधे का घनत्व कम होने से उसमें हवा का आवागमन बेहतर होता है। इससे फफूंद और कीटों का खतरा कम हो जाता है।

5. कम लागत में अधिक लाभ

- इस तकनीक को अपनाने के लिए अतिरिक्त खर्च की आवश्यकता नहीं होती, जिससे उत्पादन लागत कम रहती है।

सावधानियां

3जी कटिंग करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक है:

1. साफ उपकरणों का उपयोग करें

- छंटाई के लिए हमेशा साफ और धारदार उपकरणों का उपयोग करें। इससे पौधों में संक्रमण का खतरा कम हो जाता है।

2. समय का चयन

- छंटाई के लिए सुबह या शाम का समय उपयुक्त होता है, क्योंकि इस समय पौधे पर तनाव कम पड़ता है।

3. पौधों की नियमित देखभाल

- छंटाई के बाद पौधों को पानी और पोषक तत्व समय पर दें।

4. मौसम का ध्यान रखें

- बरसात या अत्यधिक ठंड के मौसम में छंटाई करने से बचें।

यह पौधों के लिए नुकसानदायक हो सकता है।

उदाहरण और सफलता की कहानियां

मध्य प्रदेश के एक प्रगतिशील किसान रमेश पटेल ने अपनी खेती में 3जी कटिंग तकनीक को अपनाया। उन्होंने लौकी की फसल में इस तकनीक का प्रयोग किया और पाया कि उनकी पैदावार में 30% की वृद्धि हुई। इसके साथ ही फलों की गुणवत्ता इतनी अच्छी थी कि उन्हें बाजार में अधिक कीमत प्राप्त हुई। रमेश पटेल का यह अनुभव अन्य किसानों के लिए प्रेरणादायक है।

निष्कर्ष

3जी कटिंग एक सरल और प्रभावी तकनीक है, जो कद्दूवर्गीय सब्जियों की पैदावार और गुणवत्ता को बढ़ाने में मदद करती है। यह विधि छोटे और बड़े, दोनों प्रकार के किसानों के लिए लाभदायक है। यदि इसे सही तरीके से अपनाया जाए, तो यह कृषि में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकती है।

किसानों के लिए संदेश

नई वैज्ञानिक विधियों को अपनाने से कृषि की संभावनाएं बढ़ती हैं। 3जी कटिंग जैसी तकनीकों को अपनाकर अपनी उपज को बेहतर बनाएं और कृषि में आत्मनिर्भरता प्राप्त करें। आपका प्रयास न केवल आपकी आय बढ़ाएगा, बल्कि देश की खाद्य सुरक्षा में भी योगदान देगा।